आखिर छू ही लिए सितारे

कभी-कभी लगता है कि असफलता मिली, लेकिन असलियत में वह सुअवसर होता है जिसका लाभ उठाना चाहिए, और फिर काम चल पड़ता है।''

किसी सफल अंतरिक्ष यात्री से सफलता के इस सूत्र की आशा कोई कम ही करेगा। लेकिन, सुनीता विलियम्स ने 20 सितंबर से 7 अक्टूबर तक देश भर के बच्चों को यही संदेश दिया।

गुजरात से हैदराबाद, नई दिल्ली और मुंबई का सफर करते समय उनका स्वागत एक रॉक स्टार, राजसी व्यक्ति और हीरोइन की तरह किया गया। लेकिन, उन्होंने युवा वर्ग को जो सलाह दी वह जमीनी सच्चाई थी: वह अपनी कक्षा की बुद्धिमान छात्रा नहीं थीं, उन्हें कॉलेज की पढ़ाई आसान नहीं लगी, उन्हें पता नहीं था कि जीवन के किस क्षेत्र में आगे बढ़ना है और उन्हें उनका मनचाहा काम सदा नहीं मिला। लेकिन, उन्हें जो भी अवसर मिला, उन्होंने उसका लाभ उठाया। इतिहास की पुस्तकों में आज उनका नाम एक ऐसी महिला के रूप में दर्ज़ हो गया है जिसने अंतरिक्ष में 195 दिन की सबसे लंबी अवधि तक रहने और 29 घंटे 17 मिनट तक अधिकतम समय अंतरिक्ष यान के बाहर बिताने का रिकॉर्ड बनाया है।

यद्यपि उनको अंतरिक्ष में तैरने और पृथ्वी तथा सितारों को एक नए अंदाज से देखने का अनोखा अनुभव हुआ, लेकिन उन्होंने नन्हे दोस्तों को अपनी छोटी-छोटी असफलताओं तथा जीवन के आकस्मिक मोड़ों की बातें बताईं। उन्होंने उन्हें प्ररित करते हुए कहा, ''सामने आओ और कुछ नया करके दिखाओ।''

उन्हें जीव-जंतुओं से प्यार है और वह पशु-चिकित्सक बनना चाहती थीं। और हां, अब उनके पास अपना पालतू कुत्ता तो है, लेकिन चिकित्सा की डिग्री नहीं है। अमेरिकी नौसैनिक अकादमी में प्रवेश पाने के लिए वह अपने बाल नहीं कटवाना चाहती थीं लेकिन साथ ही न्यू यॉर्क शहर में रहने से डर रही थीं जहां कोलंबिया विश्वविद्यालय में उनको पशु चिकित्सा विज्ञान में प्रवेश मिल गया था। इसलिए उन्होंने अपने बाल कटवा दिए। उनकी आंखों की ज्योति बहुत अच्छी थी और वह नौसेना के गोताखोरी कार्यक्रम में प्रवेश पाना चाहती थीं। लेकिन, उस परीक्षा में कोई और बेहतर साबित हो गया। कक्षा में अव्वल आने वालों को ही जेट पायलट बनने का मौका दिया जाता था, इसलिए उन्होंने हेलिकॉप्टर चलाना सीखा। जब उन्होंने अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए आवेदन किया, तब नासा हेलिकॉप्टर पायलटों को ही रखना चाह रहा था। और, जब वह अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन अभियान 14 तथा 15 में नासा की फ़्लाइट इंजीनियर बन गईं, तो 42 वर्षीय विलियम्स कहती हैं, ''...अंतरिक्ष में रहने का यह काम आसान नहीं था।''

उनका संदेश अतिसफल लोगों के साथ-साथ आम श्रोताओं के लिए भी प्रेरणादायक था। उनके दमकते जिज्ञासु चेहरों की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, ''जीवन में अनेक अवसर मिलते हैं। उनसे मुंह मत मोड़िए। मैं आपको चांद पर देखना चाहती हूं।'' **-एल.के.एल.**

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई में सुनीता विलियम्स अपनी एक नन्ही प्रशंसक से खुशी-खुशी मिलते हुए।

राजेश मिश्रा © ए. पी. - डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.